1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल
303 335 2038 dailyhunt TVZON MX PLAYER KaryTV

वर्ष 45, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 नवम्बर, 2021 से रविवार 21 नवम्बर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

बदलते मौसम के साथ दमघोटू जहरीली हवा से दिल्ली में त्राहिमाम्

अनावश्यक घूमने से बचें : बरतें आवश्यक सावधानी

पर्यावरण से किए गए खिलवाड़ के भयंकर परिणाम सामने - नहीं सम्भले तो यह महामारी का रूप लेगा

पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी भारत की राजधानी दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं, बदलते मौसम में लोग वैसे ही बीमार पड़ते हैं, डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया आदि से लोग भयभीत रहते हैं, ऊपर से पिछले दो सालों से कोरोना की मार क्या कम थी, किअब यह दमघोटू वातावरण जिससे दिल्ली की आबोहवा बिल्कुल जहरीली हो गई है। पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी बढ़ते प्रदूषण का कारण यही बताया जा रहा है कि दिवाली पर पटाखों और उसके बाद हरियाणा व पंजाब में जलाई जाने वाली पराली से दिल्ली की हवा में प्रदूषण बहुत ज्यादा बढ़ गया है। क्या दिवाली पहले नहीं होती थी, पराली पहले नहीं जलती थी, पटाखे पहले नहीं जलते थे, ये सब कार्य तो बहुत लंबे समय से होते आ रहे हैं। लेकिन पहले हालात यह नहीं होते थे कि लोगों का सांस लेना तक दुभर हो जाए। पिछले कई सालों से तो दिल्ली में पटाखों पर बैन भी लगता है, पराली जलाने पर भी मनाही है, लेकिन पटाखे भी धड़ल्ले से जलते हैं और पराली भी जलती है। इस लचर कानून के कारण और मजबूरी भी सबको पता है, सब राजनीतिक पार्टियों और सरकारों को अपना अपना वोटबैंक बचाकर रखना है, प्रदूषण से लोग मरें तो मरते रहें। जब न्यायालय कड़ाई करता है तो सरकार आनन फानन में थोड़ा सा दिखावा करके कुछ नियम लागू करती है, जैसे ऑड़-इवन, रेडलाइट ऑन तो गाड़ी ऑफ आदि की पहल और इनके बड़े बड़े विज्ञापन चालू हो जाते हैं। इस बार दिल्ली सरकार ने प्रदूषण के चलते 15 नवंबर से एक सप्ताह तक सभी स्कूल बंद करने तथा तीन दिन सरकारी कार्यालय बंद रखने का आदेश देकर इतिश्री कर दी है। बाकी राजस्व बढ़ाने के लिए शराब को गली-मोहल्ले में बिक्री की छुट्टी और रेट बढ़ाकर इनकम करने का प्रयास जारी है। इस तरह देखा जाए तो दिल्ली सरकार दिल्ली वासियों के स्वास्थ्य को लेकर इतनी लापरवाह है कि चाहे लोग शराब पीकर मरें या वायु प्रदूषण से, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता, उन्हें तो केवल अगली बार सत्ता में आने के लिए बिजली-पानी और महिलाओं

- शेष पृष्ठ 7 पर

वृक्ष लगाएं - पर्यावरण बचाएं

प्रदूषित हवा से बचने के उपाय

- बेवजह घर से बाहर न निकलें। सुबह कसरत या जॉगिंग करने घर के बाहर जाते हैं तो कुछ दिन के लिए घर पर ही कसरत करें।
- वाहन का इस्तेमाल कम से कम करें। आप कार पूल कर सकते हैं या सार्वजनिक वाहन का इस्तेमाल करें।
- जब भी घर से बाहर निकलें मास्क पहन कर निकलें। मास्क आपको सूक्ष्म कणों से भी बचाते हैं।
- घर में साफ सफाई का ध्यान रखें, धूल और मिट्टी जमा न होने दें।
- अगर आपको सांस लेने में दिक्कत हो रही है, तो बिना लापरवाही किए डॉक्टर को जरूर दिखा लें।
- अपने घर में अच्छा वातावरण बनाएं, घर में पौधे लगाएं जिससे आपको शुद्ध हवा मिल सके।
- जब भी कहीं बाहर से घर वापस आएं, अपना मुंह और हाथ-पैर साफ पानी से धोएं और कुल्ला करें।
- आप अपने घर में शुद्ध हवा के लिए एयर प्यूरीफायर लगवा सकते हैं।
- खाने में विटामिन-सी, ओमेगा-3 जैसे शहद, लहसुन, अदरक का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें। इसके साथ ही ज्यादा से ज्यादा पानी पिए।
- अपने घरों, दुकानों/आफिसों में हो सके तो दैनिक यज्ञ अवश्य करें।

ओ३म्

आर्य समाज द्वारा सामाजिक उत्थान को समर्पित परियोजना

महर्षि दयानन्द सरस्वती

विशिष्ट प्रतिभा स्कॉलरशिप

दिव्यांग एवं मेधावी विद्यार्थियों की सहायता हेतु चलाई जा रही इस योजना का लाभ एवं बच्चों की शिक्षा तथा उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करने का प्रकल्प

आर्य बाल विकास प्रतिभा स्कॉलरशिप

बच्चों की प्रतिभा को परखने, उभारने तथा प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए स्कॉलरशिप स्कीम कक्षा 7वीं से मेधावी छात्रों को स्कॉलरशिप दिए जाने तथा इन्हें भविष्य में IAS/IPS/IRS बनाने में सहायता देने का प्रकल्प

-: Powered By :-
NEEL FOUNDATION

योजनाओं का लाभ लेने के लिए इच्छुक विद्यार्थी दिए गए लिंक पर लॉगइन करें

https://forms.gle/c8Mtu6nYNC4ClNvv8 | https://forms.gle/8xFxFrdbe4sdD6nh8

आवेदन करने अथवा योजना सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें 9311721172 या https://dayanandsewashram.com/ पर लॉगइन करें

देववाणी-संस्कृत

ज्ञानी भक्त और विषयासक्त

वेद-स्वाध्याय

यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोम सुनोति भवति द्युमॉ अह।
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः।। ऋ. 5/34/3
ऋषिः **संवरणः प्राजापत्यः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - **यः** = जो **घ्रंस उत वा यः ऊधनि** = दिन होवे या रात सदैव ही जो **अस्मै** = इस परमेश्वर के लिए **सोमं सुनोति** = ज्ञानपूर्वक भक्ति में रहता है, यजन करता है **अह द्युमान् भवति** = वह निश्चय से तेजस्वी (प्रकाशवान्) हो जाता है ओर इसके विपरीत **ततनुष्टिम्** = विषयों में दिनों-दिन फँसते जाने वाले को, स्वार्थरत, अजयनशील को, **तनूशुभ्रम्** = शरीर की सजावट-बनावट में लगे रहने वाले को **यः कवासखः** = और जो बुरी संगत में रहने वाला है, जिसके कि यार-दोस्त कुत्सित-कर्मा लोग हैं, उस पुरुष को भी **शक्रः मघवा** = सर्वशक्तिमान् ऐश्वर्यवाला इन्द्रदेव **अप अप ऊहति** = मिटा देता है, विनाश कर देता है।

विनय - मैं इन दो प्रकार के आदमियों में से कौन-सा हूँ? क्या मुझे दिन-रात भगवान् के भजन में मस्त रहने में आनन्द आता है? क्या मैं चौबीस घण्टे उसके भजन में लीन रहता हूँ। चौबीस घण्टे न सही, क्या मैं दिन-रात में से एक घण्टा भी भगवान् के प्रति अपना हार्दिक प्रेमरस पहुंचाने में बिताता हूं? अथवा मैं 'ततनुष्टि' हूँ? दिन-रात विषयों में फँसा रहता हूँ? न खत्म होने वाले विषयों की तृप्ति में लगा रहता हूँ? स्वार्थ के लिए धन कमाने की चिन्ता में और धन के लिए दूसरों के क्लेशों की कुछ परवाह न करके और धोखा-फ़रेब भी करके उनके चूसने की नाना नयी-नयी तरकीबें सोचने और करने की फिक्र में तो कहीं मेरे दिन-रात नहीं बीतते हैं? क्या अपने शरीर की शोभा बढ़ाने, संवारने, शृंगार करने में ही जीवन के अमूल्य समय के प्रतिदिन कई घण्टे मैं नहीं खो रहा हूँ? क्या मैंने अपने अन्दर के मानसिक शरीर को भी बलवान्, स्वच्छ और सुन्दर (पवित्र) करने का भी कभी यत्न किया है? इसके लिए समय दिया है? मेरे साथी-संगी कैसे लोग हैं? कहीं मेरे इर्द-गिर्द बुरे आचरणवाले लोग तो इकट्ठे नहीं हो गये हैं? कहीं मैं कुत्सित कर्म करने वाले दुष्ट मनुष्यों से (जो ऊपर से आकर्षक होते हैं) मिलने-जुलने में आनन्द तो नहीं पाता हूं? अहो, उस सर्वशक्तिमान्- इन्द्र के नियम अटल हैं, मैं जैसा करूंगा वैसा ही मुझे भरना पड़ेगा। मैं तेजस्वी बनूंगा या मेरा विनाश होगा? भगवान् तो दिन-रात सोम-सवन करने वालों को तेजस्वी बना रहा है और विषय-ग्रस्त पुरुषों का नाश कर रहा है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

500 साल पहले के तालिबान रहे हैं मुगल

मुगल महान थे या तालिबान थे?

.....भारत में तालिबानी सोच के मौलाना भी बुर्के/पर्दे, छोटी बच्चियों की शादी की वकालत करते दिख जाते हैं। विडम्बना देखिये जब यह सब होता तब देश के ज्ञानचंद कथित बुद्धिजीवी इनके फतवों और इस निरंकुश शरियत पर सवाल के बजाय हिन्दू समाज की कुरीतियों पर बैठकर रो रहा होता है। जबकि हमारे ग्रंथो में बालविवाह व पर्दाप्रथा का कहीं भी वर्णन या चिन्ह नहीं मिलता। रामायण हो या महाभारत गार्गी जैसी विदुषी हो या विश्वआरा, अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, मैत्रेयी, सिकता, रत्नावली सब बिना पर्दे के महान विदुषी नारी रहीं। तब ये प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यह प्रथाएं भारत में कब और क्यों प्रारम्भ हुईं? और नारी शिक्षा कैसे समाप्त हुई? इस सवाल का एक ही जवाब है कि मुग़ल महान नहीं बल्कि तालिबान थे। जिसे इस बात का शोध करना हो आधुनिक अफगानिस्तान की सैर कर सकता है। .....

पिछले दिनों अफगानिस्तान को लेकर यूनिसेफ की कार्यकारी निदेशक हेनरिटा फोरे की एक रिपोर्ट आई है जिसमें अफगानिस्तान में कई परिवार बतौर दहेज धन के लालच में अपनी 20 दिन की मासूम बच्ची का भी सौदा कर रहे हैं। बाल विवाह पहले की अपेक्षा इतने अधिक बढ़ गये। बाल विवाह बढ़ा, पर्दा प्रथा बढ़ा तथा छोटी और मासूम बच्चियों तक को ब्रुके, हिजाब में लपेटा जा रहा है। एक दो प्रान्त छोड़कर तालिबान के आने के बाद लड़कियों के स्कूल जाने पर पाबंदी है।

अभी भी भारत में बहुत लोग पर्दा प्रथा या बाल विवाह को यहाँ की संस्कृति समझते है। शायद हेनरिटा फोरे की ये रिपोर्ट ये बताने के लिए काफी है कि ये हमारी संस्कृति नहीं बल्कि एक थोपी गयी अरबी मानसिकता थी। शरियत कानून के अनुसार आज भी सऊदी अरब में महिला अकेली बाहर नहीं जा सकती। अफगानिस्तान में लड़कियों पर कोड़े बरस रहे हैं। नाइजीरिया में कुरान को मानने वाले स्कूलों से बच्चियों को उठा रहे हैं और यहाँ चर्चा चल रही है हिन्दुओं में व्याप्त कुप्रथाओं पर।

इसी कारण यह सवाल अध्यन मांगने लगता है कि हिन्दुस्तान में ये कुप्रथा कब खड़ी हुई , कहाँ से आई? क्यों यहाँ बाल विवाह होने आरम्भ हुए और क्यों महिलाओं को पर्दा करना पड़ा। सतयुग, त्रेता और द्वापर काल से लेकर कलयुग में भी सम्राट समुद्रगुप्त, अशोक विक्रमादित्य, चंद्रगुप्त मौर्य व पृथ्वीराज चौहान व आल्हा-ऊदल की कथाओं में भी शिक्षित व युवा कन्याओं व युवकों के विवाह का वर्णन मिलता है। कोई परदा व्यवस्था नहीं थी। महिलाएं विवाह और पुनर्विवाह के लिए स्वतंत्र थीं। यहां तक कि उनके बीच विधवा-विवाह की भी अनुमति थी। न कहीं पर्दा प्रथा थी न ही लड़कियों को पढ़ाना पाप समझा जाता था। फिर इस भारत में ऐसा क्या हुआ कि सब बंद हो गया। महिलाये घर में कैद, घुघंट के पर्दे का पहरा आरम्भ हो गया। जहाँ युवा कन्याओं को अपना पति चुनने का अधिकार था वहां अचानक छोटी-छोटी बच्चियों की शादी होने लगी। उन बच्चियों की जिन्हें विवाह का मतलब तक नहीं पता होता था।

जैसा आज अफगानिस्तान में तालिबान कर रहा है ऐसा यहाँ करीब 500 सौ साल पहले हो चूका है। और सवाल बन जाता है कि तब यहाँ कौनसा तालिबान था। तालिबान के मुल्ला अखुंद वाला तालिबान था या अकबर का तालिबान का? इतिहास बताता है कि अरब देशों में कबीलायी संस्कृति थी। एक कबीले के लोग दूसरे कबीलों की महिलाएं लूटा करते थे। जिस कारण युद्ध भी होते थे। जब महिलाओं को उठाकर ले आते थे और उन्हें कोई पहचान ना ले इस कारण उन्हें पर्दे में ढक देते थे, बुर्के के डाल देते थे। उन्हें अकेली घर से भी इस कारण नहीं निकलने दिया जाता था कहीं वह वापिस अपने पहले घर या पति के पास ना चली जाये। यानि यह प्रथा उस कालखण्ड व क्षेत्र की आवश्यकता बन गयी, जिसे मजहबी मौलानाओं का भी संरक्षण मिला उनके पढ़ने-लिखने पर पाबंदी लगा दी गयी और उन्हें पुरुषों की खेती कहा जाने लगा।

जब ये सब अरब में हो रहा था, इन सबसे बेखबर भारत में महिलाये स्वतंत्रतापूर्वक जी रही थी। कोई पर्दा-प्रथा नहीं थी। वे गुरुकुलों में पढ़ती थी। युवा होने पर अपने पति का खुद चुनाव करती थी। या फिर प्रतियोगिता होती थी जिसे स्वयंवर भी कहा जाता था। पुरुष को किन्हीं अस्त्र-शस्त्र प्रतियोगिता हो या दक्षिण भारत की जलीकट्टू जैसी प्रतियोगिता मसलन पुरुष खुद को साबित करना होता था तब लड़कियां उन्हें अपने पति के रूप में चुनाव करती थी। सबकी अलग-अलग श्रेणी होती थी। अध्यनशील युवा विदुषी कन्या अध्यनशील और शस्त्र में पारंगत कन्या विद्वान पुरुषो का अपनी मर्जी से चुनाव किया करती थी।

उसी दौरान अरब का तालिबान भारत आना शुरू हो गया। भारत में उस समय अहिंसा का प्रचार चरम पर था तथा आडंबरों की सीमा तक पहुंच गया था। कुछ मतों पंथों के अहिंसा के सिद्धान्तों ने अस्त्र-शस्त्र भी जमीन में गड़वा दिए गए थे। इससे आक्रमणकारियों का कार्य सरल हो गया। मुग़ल तालिबानियों ने इसका जमकर फायदा उठाया। धन, राजपाट, महिलायें, उद्योग व्यापार लूटा और कब्ज़ा भी किया तथा धार्मिक व शैक्षणिक संस्थाओं को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। शस्त्र विहीन जनता और प्राकृतिक सम्पदा की प्रचूरता के कारण तालिबानी मुगल भारत में ही जम गए।

उनके मजहब में चार विवाहों की प्रथा थी। इस कारण सत्ता के बल पर तालिबानी मुग़ल लुटेरे नव-विवाहितों के डोले लूटने लगे। युवा लड़कियों का अपहरण व महिलाओं के साथ दुराचार आम हो गया। लड़कियों का विद्यालय जाना भी दूभर हो गया। इस डर से अनेकों हिन्दू राजाओं ने मुगलों से सन्धियाँ की और उनके सहयोगी हो गए। मुगल तालिबानियों का आतंक चरम पर था, धर्मान्तरण के द्वारा भी उनके सहयोगी बढ़े। मसलन इसे ऐसे समझिये कि नारी सुरक्षा, नारी सम्मान के लिए न तो सैन्य शक्ति थी न ही देशी राजाओं में एकता थी एवं जनसाधारण अर्थात प्रजा भी सामर्थ्यवान नहीं थी। जिस कारण मुगलों द्वारा महिलाओं की लूटपाट व दुराचार पर रोक संभव नहीं थी।

सक्षम लोग अपनी रक्षा कर लेते थे परन्तु निर्धन व कमजोरों पर अधिक अत्याचार हुआ। परिणाम स्वरुप भारतियों ने भी मुगलों का अनुशरण करते हुए महिलाओं को पर्दे में रखना शुरू कर दिया। और लड़कियों का विद्यालय जाना बंद किया कर दिया, इससे विद्यालय बंद हो गए। पांच से दस वर्ष की आयु में लड़कियों के विवाह होने लगे। युद्ध में मारे गये सैनिकों और राजाओं की पत्नियाँ मुग़ल तालिबानियों के हाथों में रोंदे जाने के डर से उनकी चिता में कूदकर जान देने लगीं। देखते-देखते भारत में बालविवाह, पर्दाप्रथा व सती प्रथा प्रारम्भ हो गई। सिर्फ इतना ही नहीं डर का आलम यह था कि जब विवाह के दिन दुल्हन लूटी जाने लगी तो इससे भारत में रात्रि में चोरी छिपे विवाह होने आरम्भ हो गये जो आज भी हो रहे हैं।

प्राचीन चित्र कहो या प्रतिमाएं ये बताती हैं कि ईसा से तीन सदी पहले मौर्य और शुंग राजवंश के समय तब स्त्री और पुरुष आयताकार कपड़े का एक टुकड़ा शरीर के निचले हिस्से में और एक ऊपरी हिस्से में पहना करते थे। इसके बाद विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन बताता है कि मृच्छकट्टिकम की वसंतसेना पर्दे का विरोध करती दिखाई पड़ती है।

शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्यसमाज की वैदिक धर्म तथा दर्शनों की मान्यताएं

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का प्रधान कार्य वैदिक धर्म के विशुद्ध रुप के पुनरुत्थान का था। उनका मानना था कि सत्य सनातन वैदिक धर्म के अनुसार ईश्वर एक है, जो विश्व में सर्वोच्च सत्ता है, उसका कोई आकार नही होता। अत: उसकी मूर्ति नही बनाई जा सकती। ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता। वह सर्व व्यापक है, ईश्वर को किसी भी कार्य के लिए मानव का जन्म का या अन्य जीव का शरीर धारण करने की आवश्यकता नहीं होती। श्री राम, श्री कृष्ण आदि महापुरुष थे, वे ईश्वर नही थे और न ही ईश्वर के अवतार थे।

आत्मा ईश्वर से भिन्न है। तीन अनादि सत्तायें हैं, ईश्वर-जीव-प्रकृति। वेद त्रैतवाद के समर्थक हैं। उनका मत था कि मृत्यु के साथ आत्मा का अन्त नहीं होता। अन्त शरीर का होता है, और पुराने शरीर को त्याग कर आत्मा नया शरीर ग्रहण कर लेती है। आत्मा का रुपान्तरण होता है, शरीर का पुन: जन्म होता है तथा मृत व्यक्ति के लिए पिण्ड दान करना, पितरों का श्राद्ध और तर्पण करना वेदों में नहीं है। महर्षि दयानन्द जी ने वैदिक धर्म के सब विकृतियों के विरुद्ध आवाज उठाई और उसके सत्य स्वरूप को प्रतिपादित किया। यह एक महत्वपूर्ण कार्य था।

वैदिक धर्म के संवर्धन क सम्बन्ध में उनका कार्य वस्तुत: अत्यन्त महत्व का था। उन्होनें वैदिक धर्म का जिस रुप का निरूपण किया वह प्रचलित सनातन धर्म के अनेक अंशों में प्रतिकूल था। कारण यह थे तत्कालीन आचार्यों के न दार्शनिक मन्तव्य के अनुसार थे और न पूजा विधि के थे। वैदिक धर्म के वास्तविक व विशुद्ध रूप को पुन: स्थापित करने का प्रयत्न भारत के सुदीघ इतिहास में योगीराज श्री कृष्ण के पश्चात् केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा ही किया गया।

प्रचलित मान्य भगवानों की बाढ़ से अलग वेदों में ऐकेश्वरवाद

महर्षि दयानन्द जी का मन्तवय है कि विश्व में वेदानुसार सर्वोच्च शक्ति केवल एक ईश्वर है। विश्व में बहुत से देवी देवताओं की सत्ता है यह मन्तवय वेदानुकूल नहीं है। सृष्टि का कर्त्ता पालक और संहर्त्ता एक ईश्वर है और विश्व की यह सर्वोपरि शक्ति प्रकृति के विविध रूपों तथा सृष्टि के अनेकविध तत्वों में अपने को अभिव्यक्त करती है। देवता उसे कहते है जिसके गुण-कर्म स्वभाव दिव्य हों। परमेश्वर सर्वोपरि देवता या देवताओं का भी देवता हैं अत: ईश्वर को महादेव भी कहा जाता है। ईश्वर के स्वरूप का सुस्पष्ट प्रतिपादन आर्य समाज के दूसरे नियम में इस प्रकार किया गया है- ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। ईश्वर सृष्टि का उपादान कारण न होकर निमित कारण है। प्रकृति भी अनादि और अनन्त है जिसे ईश्वर उसी प्रकार सृष्टि के रूप में विकसित अथवा निर्मित करता है जैसे कि कुम्हार मिट्टी को घड़े के रूप में करता है।

.....विश्व की सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर की पूजा के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्तुति-प्रार्थना और उपासना का विधान किया है। क्योंकि ईश्वर निराकार है उसकी मूर्ति हो ही नहीं सकती। जो लोग कहते हैं कि निराकार होने के कारण परमेश्वर का ध्यान करना कठिन होता है उनका उत्तर देते हुए कहा कि निराकार का ध्यान करने में कोई कठिनाई नहीं है। शब्द का आकार नहीं तो शब्द ध्यान में आता कि नहीं। परमेश्वर निराकार है सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्ति ही नहीं बन सकती और जो मूर्ति के दर्शन मात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर के बनाये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ जिनमें परमेश्वर ने अदभुत रचना की है। क्या ऐसी रचनायुक्त पृथ्वी पहाड़ आदि परमेश्वर रचित महामूर्तियां के जिन पहाड़ आदि से मनुष्यकृत मूर्तियां बनती हैं? क्या उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता।.....

षड्दर्शनों में समन्वय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व आर्य समाज स्वीकार करता है कि वेदों को स्वत: प्रमाण मानने वाले आस्तिक छह दर्शन शास्त्र हैं। सांख्य-योग-न्याय-वैशेषिक-पूर्वमीमांसा और वेदान्त दर्शन शास्त्र। उनका मन्तव्य यह है कि छहों आस्तिक दर्शन दार्शनिक तथ्यों का भिन्न-भिन्न पहलुओं से प्रतिपादन करते है उनमें कोई विरोध नहीं है। उनके मन्तव्यों का अनुशीलन समन्वयात्मक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए और यही मत दर्शन शास्त्रों के प्राचीन व्याख्याकारों का भी है। दर्शनों में विरोध नहीं है। विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्ध वाद होता है। छह शास्त्रों में विरोध इस प्रकार दिखता है कि मीमांसा में ऐसा कोई भी कार्य जगत में नहीं होता कि जिसे बनाने में कर्म चेष्टा न की जाये। वैशेषिक में समय न लगे बिना बने ही नहीं। न्याय में दर्शन से उपादान कारण न होने से कुछ भी नही बन सकता। योगदर्शन में विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाए तो नहीं बन सकता। सांख्य दर्शन में तत्वों के मेल होने से नहीं बन सकता। वेदान्त दर्शन में बनाने वाला न बनाए तो कोई छ: कारणों की व्याख्या एक-एक की एक शास्त्र में है। इसलिए इनमें विरोध कुछ भी नहीं है।

त्रैतवाद की मान्यता

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्राचीन आर्ष शास्त्रों के अनुसार हजारों वर्षों बाद त्रैतवाद का ज्ञान कराया। उनके अनुसार तीन सत्ताएं या तत्व अनादि हैं वह हैं ईश्वर-जीव-प्रकृति। ये तीनों एक-दूसरे से प्रथक अपनी स्वतन्त्र सत्ता रखते हैं। यही मन्तव्य वेदानुसार है। और उपनिषिदों और दर्शन शास्त्रों ने इसी को प्रतिपादित किया है। इसके अनुसार ईश्वर सृष्टिकर्त्ता है वह सृष्टि का निमित कारण है और उसी प्रकार प्रकृति से सृष्टि का निर्माण करता है जैसे कुम्हार मिट्टी से घड़े का। जीव या जीवात्मा भी ईश्वर के समान ही अनादि हैं। इन तीन अनादि को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ऋग्वेद का मंत्र प्रस्तुत किया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य पिप्पलं स्वाद्वत्यश्नन्नन्यो अभिचाक शीती।। (ऋग्वेद)

ब्रह्म और जीव दोनों चेतनता और पालनादि गुणों के सदृश व्याप्त व्यापक भाव से सयुंक्त परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि हैं। और वैसा ही अनादि मूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात जो स्थूल होकर छिन्न भिन्न हो जाता है वह तीसरा पदार्थ इन तीनों के गुण कर्म स्वभाव भी अनादि हैं। इनमें जीव व ब्रह्म में से एक जो जीव है वह इस वृक्ष रूप संसार के पाप-पुण्य रूप फलों को अच्छी प्रकार भोगता हुआ और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात बाहर भीतर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप तीनों अनादि हैं। प्रकृति जीव और परमात्मा तीनों अज अर्थात जिनका जन्म कभी नही होता। न कभी जन्म लेते हैं। से तीनों जगत के कारण हैं। इनका कोई कारण नही। इस अनादि प्रकृति का भोग करता है। (सत्यार्थ प्रकाश)

मूर्ति पूजा और अवतारवाद का विरोध

विश्व की सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर की पूजा के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्तुति-प्रार्थना और उपासना का विधान किया है। क्योंकि ईश्वर निराकार है उसकी मूर्ति हो ही नहीं सकती। जो लोग कहते हैं कि निराकार होने के कारण परमेश्वर का ध्यान करना कठिन होता है उनका उत्तर देते हुए कहा कि निराकार का ध्यान करने में कोई कठिनाई नहीं है। शब्द का आकार नहीं तो शब्द ध्यान में आता कि नहीं। परमेश्वर निराकार है सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्ति ही नहीं बन सकती और जो मूर्ति के दर्शन मात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर के बनाये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ जिनमें परमेश्वर ने अदभुत रचना की है। क्या ऐसी रचनायुक्त पृथ्वी पहाड़ आदि परमेश्वर रचित महामूर्तियां के जिन पहाड़ आदि से मनुष्यकृत मूर्तियां बनती हैं? क्या उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता। (सत्यार्थ प्रकाश)

वेद मन्त्र **न तस्य प्रतिमा अस्ति** में ईश्वर की प्रतिमा (मूर्ति) न होने की बात को प्रतिपादित किया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अवतार वाद का भी विरोध किया है। ईश्वर अवतार शरीर धारण किए बिना जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करता है उसके सामने कंस और रावण आदि एक कीड़ी के समान भी नहीं। जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर नाश कर सकता है। अवतार वाद के खण्डन में महर्षि का कहना है कि राग, द्वेष, क्षुधा, तृष्णा, भय, शोक, दु:ख-सुख, जन्म-मरण आदि मनुष्य के गुण हैं ईश्वर के नहीं।

ध्यानाकर्षण: महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज द्वारा 10 अप्रैल, 1875 से आज 2021 तक 147वां वर्ष लगा हुआ है। इन वर्षों में आर्य समाज द्वारा जो आर्ष व वैज्ञानिक, धार्मिक व सामाजिक सुधार किये गये हैं वह सारा संसार परोक्ष व अपरोक्ष रूप से मान रहा है और जब तक संसार रहेगा आर्य समाज सूर्य की तरह संसार को सुधारवादी आर्ष वैचारिक प्रकाश फैलाता रहेगा।

इस लेख में आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग लेखक डॉ.सत्यकेतु विद्यालकांर जी के ग्रन्थ से कुछ मुख्य विचार लिए गये हैं।

- पं. उम्मेद सिंह विशारद
गढ़ निवास, मोहकमपुर, देहरादून

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

सृष्टिकर्ता और पालक ईश्वर कहां रहता है और क्या करता है?

..... ईश्वर किसी स्थान विशेष यथा क्षीर-सागर, चौथे आसमान व सातवें आसमान पर रहता है। वेदों व ऋषियों ने ईश्वर को सर्वान्तर्यामी बताया है। गीता में भी कहा है कि ईश्वर सब प्राणियों के हृदयों में विद्यमान है। यह वस्तुतः सत्य है जिसका विश्वास वेद एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन सहित चिन्तन व मनन करने पर सभी मनुष्यों को हो जाता व हो सकता है। अतः ईश्वर कहां रहता है, प्रश्न का उत्तर है कि ईश्वर संसार में सब जगह वा स्थानों पर विद्यमान है। उसे प्राप्त करने के लिए हमें उसे अपने हृदय व आत्मा के भीतर ही खोजना है। वहीं वह प्राप्त होगा। उसे ढूंढने के लिए किसी तीर्थ व प्रसिद्ध स्थानों पर जाने की आवश्यकता नहीं है।.....

ईश्वर और उसके अन्य सभी गुण, कर्म और सम्बन्ध वाचक नाम वेदों से संसार में प्रसिद्ध हुए हैं। वेद, सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों की अमैथुनी सृष्टि के साथ परमात्मा की ओर से चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के माध्यम से प्राप्त हुए ज्ञान व उसकी पुस्तकें हैं। इस सृष्टि को ईश्वर ने ही उत्पन्न किया है और सृष्टि की आदि में इन चार ऋषियों सहित सभी चराचर जगत को भी उसी ने उत्पन्न किया है। वही इस सृष्टि का अपनी सर्वशक्तिमतता व सर्वज्ञता सहित सर्वव्यापकता एवं अन्य अनन्त गुणों के द्वारा संचालन कर रहा है। ईश्वर सर्वान्तर्यामी भी है। अतः उसने उपर्युक्त चार ऋषियों को एक एक वेद का ज्ञान उनकी आत्माओं में प्रेरणा करके प्रदान व स्थापित किया था। इन ऋषियों ने ही सृष्टि के अन्य ऋषि तुल्य मनुष्य ब्रह्मा जी और अन्य मनुष्यों को अध्ययन कराने सहित वेदों की शिक्षाओं से परिचित कराया था। यदि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति (सृष्टि उत्पत्ति का सत्व, रज व तम गुणों से युक्त सूक्ष्म अनादि कारण जो कि जड़ता के गुण से युक्त हैं) तथा आकाश, काल आदि अनादि काल से विद्यमान न होते तो, न तो हमारी सृष्टि का अस्तित्व होता, न हमारा और न ही ईश्वर का। यह ईश्वर, जीवन तथा प्रकृति तीनों सत्तायें अनादि हैं। आकाश व काल भी अनादि हैं। आकाश व काल का पदार्थरूप में अस्तित्व नहीं है। ईश्वर का सृष्टि रचने व उसे संचालित करने का ज्ञान व शक्ति भी अनादि है। इसी से हमारा यह ब्रह्माण्ड व इसकी सभी रचनायें अस्तित्व में आयीं हैं।

ईश्वर कहां रहता है और क्या करता है? इसे समझने के लिए हमें ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव को संक्षेप में जानना होगा। वेदों के उच्च कोटि के ऋषि व विद्वान स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज के दस नियम बनायें हैं। इसमें दूसरा नियम वेदों के सर्वथा अनुकूल बनाया है जिसमें कहा गया है कि ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। इस नियम में ईश्वर के कुछ मुख्य गुण, कर्म व स्वभाव सम्मिलित हैं। यह सभी गुण इस सृष्टि में कार्यरत नियमों के आधार पर सत्य सिद्ध होते हैं। ईश्वर का एक गुण उसका सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी होना है। इसका अर्थ है कि ईश्वर इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्यापक अर्थात् विद्यमान है। वह आकाश से भी सूक्ष्म एवं आकाश के समान ही सर्व व्यापक है। इसका अर्थ है ईश्वर इस अनन्त ब्रह्माण्ड में सर्वत्र विद्यमान है अर्थात् निवास कर रहा है। अनन्त ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई स्थान नहीं है कि जहां ईश्वर समान रूप से विद्यमान व व्यापक न हो। सर्वत्र व्यापक होने के कारण ही वह इस सृष्टि को बना पाता है व इसका संचालन कर पाता है। यदि वह सर्वत्र विद्यमान वा सर्वव्यापक न होता तो यह सृष्टि बननी व अस्तित्व में आनी असम्भव थी।

ईश्वर की सर्वव्यापकता से ही यह सम्भव हुआ है कि यह सृष्टि बन सकी है। अतः ईश्वर इस सृष्टि में सर्वत्र अर्थात् प्रत्येक स्थान पर समान रूप से विद्यमान है। इसके समस्त गुण भी सर्वत्र अखण्ड व एक-रसता से उसमें विद्यमान है। ईश्वर प्रकाशस्वरूप है। उसे कोई अपौरुषेय रचना व कार्य करने के लिए सूर्य या प्रकाश आदि किसी साधन की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह पृथिवी के भीतर व माता के गर्भ में भी, जहां गहन अन्धकार है, सन्तान व उसके सभी अंग-प्रत्यंगों सहित मनुष्य आदि प्राणियों के शरीरों की रचना करता है। अतः ईश्वर का ब्रह्माण्ड के सभी स्थानों पर उपस्थित, विद्यमान होना सिद्ध है। इससे यह भी खण्डन हो जाता है कि ईश्वर किसी स्थान विशेष यथा क्षीर-सागर, चौथे आसमान व सातवें आसमान पर रहता है। वेदों व ऋषियों ने ईश्वर को सर्वान्तर्यामी बताया है। गीता में भी कहा है कि ईश्वर सब प्राणियों के हृदयों में विद्यमान है। यह वस्तुतः सत्य है जिसका विश्वास वेद एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन सहित चिन्तन व मनन करने पर सभी मनुष्यों को हो जाता व हो सकता है। अतः ईश्वर कहां रहता है, प्रश्न का उत्तर है कि ईश्वर संसार में सब जगह वा स्थानों पर विद्यमान है। उसे प्राप्त करने के लिए हमें उसे अपने हृदय व आत्मा के भीतर ही खोजना है। वहीं वह प्राप्त होगा। उसे ढूंढने के लिए किसी तीर्थ व प्रसिद्ध स्थानों पर जाने की आवश्यकता नहीं है।

हमें योगदर्शन का अध्ययन कर उसके अनुसार यम व नियमों का पालन करते हुए धारणा, ध्यान व समाधि को सिद्ध करना चाहिये। ऐसा करने पर हम ईश्वर का अपनी आत्मा में साक्षात्कार व प्रत्यक्ष कर सकेंगे। समाधि अवस्था में साधक व उपासक को ईश्वर का साक्षात्कार होता है। उपासक वेद के शब्दों में कह उठता है कि उसने ईश्वर का जान लिया व प्रत्यक्ष कर लिया है। वह ईश्वर महान है, वह आदित्य वर्ण वाला तथा अन्धकार व अज्ञान से सर्वथा रहित है। वह पूर्ण ज्ञान से युक्त सर्वज्ञ है। उस ईश्वर को जानकर ही मनुष्य मृत्यु को पार कर ईश्वर के सान्निध्य व आनन्द से युक्त मोक्ष को प्राप्त होते हैं। इससे भिन्न ईश्वर को प्राप्त करने, मोक्ष प्राप्त करने व मृत्यु से पार जाने का अन्य कोई मार्ग नहीं है। अतः ईश्वर सभी जगहों पर विद्यमान है। उपासना द्वारा उसका साक्षात्कार किया जा सकता है। साक्षात्कार होने पर ही मनुष्य जन्म व मृत्यु के आवागमन से छूटता तथा ईश्वर के आनन्द व सान्निध्य को मोक्षावधि 31 नील 10 खरब वर्षों से अधिक कालावधि के लिए प्राप्त होता है।

ईश्वर क्या करता है, इसे भी हम संक्षेप रूप में जान लेते हैं। ईश्वर सक्रिय रहने वाली सत्ता है। वह निष्क्रिय सत्ताओं के समान सत्ता व पदार्थ नहीं है। वह अपनी अनादि व नित्य प्रजा जीव, जो कि अनन्त संख्या में हैं, को उनके पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार सुख व दुःख रूपी फल प्रदान करती है। इसके लिए वह सृष्टि की रचना कर उन्हें वेदों का ज्ञान देती है जिसमें मनुष्यों के करणीय एवं अकरणीय कर्तव्यों का ज्ञान है। जीवात्मा वा मनुष्य आदि भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेकर अपने पूर्वजन्मों का फल भोगते हैं। मनुष्य योनि ही उभय योनि अर्थात् कर्म एवं फल भोग योनि है। मनुष्य योनि में मनुष्यों को कर्म करने की स्वतन्त्रता भी है और साथ ही उन्हें अपने पूर्व कर्मों जिसमें इस जन्म सहित पूर्व जन्मों के कर्म भी सम्मिलित हैं, सुख व दुःख रूप में भोगने होते हैं। मनुष्य का किया हुआ कोई भी कर्म बिना भोगे क्षय व नाश को प्राप्त नहीं होता है। अतः हम सबको कभी भी कोई अशुभ वा पाप कर्म नहीं करना चाहिये। यदि करेंगे तो इस जन्म व बाद के जन्मों में अवश्यमेव भोगने होंगे। मनुष्यों से इतर अन्य सभी प्राणी योनियां केवल भोग योनियां होती हैं जहां जीव मनुष्य योनि में किये गये अपने पाप कर्मों का फल भोगते हैं। यह पशु, पक्षी आदि प्राणी भी पूर्वजन्मों में मनुष्य रहे थे परन्तु अधिक पाप कर्मों के कारण परमात्मा ने इनको फल भोगने के लिए इस जन्म में पशु व पक्षी आदि बनाया है। भोग समाप्त होने पर मनुष्येतर जीवों का पुनः मनुष्य योनि में जन्म होता है। वेदों का यह ज्ञान सत्य

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

आर्य समाज ने कुष्ठ रोगियों के साथ मनाई दिवाली

- कुष्ठ रोगियों को तिरस्कार नहीं अपनत्व दे : अर्जुन देव चड्ढा

कोटा. आर्य समाज परोपकार की अग्रणी संस्था के रूप में निरंतर कार्य कर रही है, आर्य समाज के छठे नियम में बताया गया है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अतः आर्य समाज जरूरतमंद, कुष्ठ रोगियों, विकलांगों, वंचितों की सेवा व सहायता के लिए तत्पर रहता है। आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में लाल चंद आर्य मंत्री एवं उप प्रधान आर्य समाज तलवंडी, राधाबल्लभ राठौर कोषाध्यक्ष आर्य समाज महावीर नगर, भेरो लाल शर्मा, आर्य पुरोहित व पूर्व मंत्री आर्य समाज तलवंडी, आर्य विद्वान शोभाराम आर्य सोमवार को रंगबाड़ी रोड स्थित हरिओम नगर की कुष्ठ रोगियों की बस्ती में पहुंचे और आर्य कार्यकताओं ने कुष्ठ रोगियों, महिलाओं, पुरुषों व विकलांगों के साथ उनका मुंह मीठा कराते हुए दिवाली मनाई। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार प्रभारी आचार्य अग्निमित्र शास्त्री व संभागीय महामंत्री अरविंद पांडे ने बताया कि उक्त अवसर पर कुष्ठ रोगियों को आटा, चावल, दाल, शक्कर, आदि खाद्य सामग्री का वितरण किया गया साथ ही उनका मुंह मीठा कराकर दीवाली मनाई गई। शास्त्री व पांडे ने बताया कि बस्ती के बच्चों को दीपावली के अवसर पर बिस्किट, टॉफी व पटाखे के पैकेट वितरित किए गए। संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि कुष्ठ रोगियों को तिरस्कार नहीं अपनत्व की आवश्यकता है यह ईश्वर की बनाई सजीव मूर्तियां हैं। हर सक्षम वर्ग को निर्धन व जरूरतमंदों की हर संभव मदद का भाव रखना चाहिए।

गरीब सेवा बस्तियों एवं जे.जे. कालोनियों में सेवा कार्यों के लिए वस्त्र एकत्रण कैम्प का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' द्वारा वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्त्रों व शिक्षा हेतु किताबों, खिलोनों का वितरण किया जा रहा है। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

जब-जब समाज में रहने वाले वंचितों को मूलभूत चीजों की आवश्यकता रही है आर्य समाज हर क्षेत्र में आगे आया है। अब जब मौसम करवट ले रहा है और सर्द हवायें शुरू हो गयी हैं ऐसे में हमारे समाज में कई लोग हैं जो अपने तन को इन हवाओं से नहीं बचा सकते।

उनकी इस मुश्किल को आसान करने के लिए गत दिनों 2 नवम्बर, 2021 को आर्यसमाज शादीखामपुर दिल्ली में सहयोग की ओर से वस्त्र एकत्रण कैम्प लगाया गया। जिसमें गर्म ऊनी कपड़े व कम्बल इत्यादि इकट्ठे किए गए।

कार्यक्रम के आयोजन में और सामान को इकट्ठा करवाने में आर्य समाज के अधिकारी श्री कृपाल सिंह जी व श्रीमती सरोज यादव जी ने अपनी अहम् भूमिका निभाई।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंदों तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान,
दिल्ली-110007

नाड़ी विज्ञान

चिकित्सा जगत में नाड़ी विज्ञान का अनुभव होना अपने आप में एक अनुपम उपलब्धि आज भी मानी जाती है। आधुनिक परिवेश में जो स्वास्थ्य परीक्षण के लिए एक्सरे, अल्ट्रासाउंड, रक्त जांच, इत्यादि अनेकानेक परीक्षणों के बाद चिकित्सक किसी निर्णय पर पहुंचता है, प्राचीन काल में नाड़ी विज्ञान के अनुभव से तुरंत जान लेते थे कि किस कारण से रोगी कष्ट में है और रोगी को उपचार के लिए औषध के साथ-साथ परहेज तथा सावधानी बरतने की हिदायत दी जाती थी। इससे रोगी का समय और पैसा दोनों की पूरी बचत होती थी। लेकिन आजकल के समय में चिकित्सा जगत ने आधुनिक तकनीकी क्षेत्र में उन्नति के साथ-साथ चिकित्सा की महान गरिमा को खोया है। आर्य संदेश के इस अंक में प्रस्तुत है नाड़ी विज्ञान विषय पर आधारित लेख...

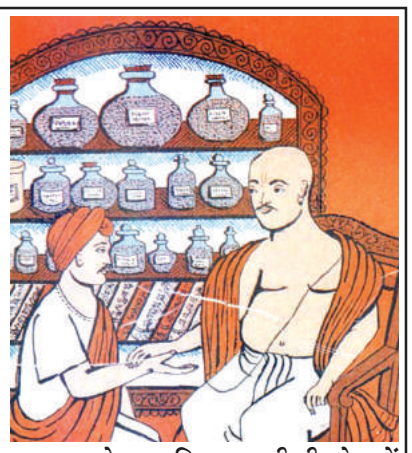

स्वस्थ नाड़ी का लक्षण- स्वस्थ मनुष्य की निर्दोष नाड़ी केंचुए तथा सर्प की तरह स्थिर एवं धीमी गति से चलती है और बलवान होती है। अर्थात् स्वस्थ एवं निरोग व्यक्ति की नाड़ी स्थिर एवं सबल होती है।

स्वस्थ एवं रोग रहित व्यक्ति की नाड़ी प्रात:काल स्थिर, चिकनी एवं मन्द गति से चलती है। दोपहर को उष्णता से युक्त तथा सायंकाल को चंचल गति से चलती है। इस प्रकार की गति उन व्यक्तियों की होती हैं जो अधिक दिनों से निरोग होते हैं।

प्रात:काल कफ का प्रकोप, दोपहर को पित्त का प्रकोप तथा सायंकाल वात का प्रकोप सामान्यत: होता है। इसी के आधार पर प्रात:काल मन्दगामिनी स्निग्ध नाड़ी कफ की होती है। मध्याह्न में चपल गामिनी उष्ण नाड़ी पित्त की होती है तथा सायंकाल वक्रगामिनी तथा तेज नाड़ी वात की होती है। यह लक्षण तब होता है जब व्यक्ति अधिक दिनों से बीमार नहीं होता है।

रात्रि में स्वभाव से ही दिन की अपेक्षा उष्णता कम होती है तथा इन्द्रियों के विश्रान्त होने से नाड़ी की गति उत्तेजना रहित होती है। दिन में समय भेद से स्निग्ध, उष्ण तथा दौड़ती हुई नाड़ी चलती है। रात्रि में प्रकृतिस्थ होती है। इस प्रकार की गति वाली नाड़ी स्वाभाविक होती है। ऐसा विद्वान चिकित्सक समझे।

रोग मुक्त नाड़ी के लक्षण-रोग मुक्त होने पर या आरोग्यावस्था में जब नाड़ी साफ-साफ क्रम से मालूम पड़े, दोषों के प्रकोप न होने से निर्मल हो तथा वात, पित्त, कफ की नाड़ी अपने स्थान पर अपनी गति के अनुसार स्पन्दन करती हो, न चंचल हो औन न मन्द हो-ये सब नाड़ियों के शुभ लक्षण हैं अर्थात् इस प्रकार की नाड़ी चले तो व्यक्ति को स्वस्थ समझना चाहिए।

सुखसाध्या नाड़ी का लक्षण - अपने स्वभाव से ही नाड़ी जिस समय जिस धातु को प्राप्त हो, जैसे प्रात:, मध्याह्न, सायं या भोजन के आदि मध्य पच्यमान काल, पाककाल के बाद, स्वभाव से ही वात, पित्त, कफ का ही प्रावल्य होता है। उसी समय उस धातु की वात के समय वात की गति, पित्त के समय पित्त की गति तथा कफ के समय कफ की गति ठीक हो तो रोगी का रोग सुखसाध्य है ऐसा नाड़ी विज्ञान के विशेषज्ञ समझते हैं। अर्थात् बिना कष्ट के ही आरोग्य प्राप्त करता है।

जिस क्रम से वात, पित्त, कफ का संचय, प्रकोप तथा शान्ति होती है, उसी क्रम में नाड़ी की गति हो शीत, ग्रीष्म, वर्षा, पूर्वाह्न भाग एवं भोजन के समय, पाक होने के समय, जीर्ण होने के बाद, वात, पित्त, कफ का क्रम से प्रकोप होता है। अपने दोष के प्रकुपित होने के काल में ठीक-ठीक उसी की गति को लेकर नाड़ी चले तो रोगी के रोग को सुखसाध्य समझें।

- शेष अगले अंक में

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

He therefore tried his best to put an end to it. For this purpose he got up a big memorial which was signed by Hindus, Mohammadans and Christians. All these people wanted the slaughter of cows to be forbidden by law.

Swami Dayanand was in favour of the abolition of untouchability. He wanted people to treat the so-called depressed classes well. It is said at one place a barber brought food for him and Swami Dayanand partook of it without any hesitation. At another place a low-caste Hindu came to hear his lecture. As soon as the people saw him, they tried to send him away. But when Swami Dayanand came to know of it he took them to task for their narrow-mindedness. “What right had you," he asked, “to send this man away? He has as much right to hear my lectures as any high-caste Hindu. As the air is meant for all, so are the Vedas. As the sun gives heat and light to everybody, so does Dharma work for the good of all. All are welcome to listen to my lectures on Dharma. They are open to all, the rich and the poor, the great and the small."

Swami Dayanand believed that the Vedic religion was meant for all. He wanted to bring even non-Hindus into its fold. He believed, therefore, in Shuddhi or the purification of the non-Hindus. One Malkana went to see Swami Dayanand and said, “I believe in the Vedic religion. I think it to be the best. Please let me know what should do to become its follower." ‘‘Nothing is easier," said Swami Dayanand. “We will have to perform the purification ceremony and that will make you once of us. You must remember that our religion is meant for all and not only for a few."

Swami Dayanand was in favour of the abolition of untouchability. He wanted people to treat the so-called depressed classes well. It is said at one place a barber brought food for him and Swami Dayanand partook of it without any hesitation. At another place a low-caste Hindu came to hear his lecture. As soon as the people saw him, they tried to send him away. But when Swami Dayanand came to know of it he took them to task for their narrow-mindedness. “What right had you," he asked, “to send this man away? He has as much right to hear my lectures as any high-caste Hindu. As the air is meant for all, so are the Vedas. As the sun gives heat and light to everybody, so does Dharma work for the good of all. All are welcome to listen to my lectures on Dharma. They are open to all, the rich and the poor, the great and the small."

In the same way a Mohammadan came to him one day and said, “I am impressed with what you say. I really believe what you say is true. Cannot I be one of you?" Swami Dayanand said that he was prepared to convert him to Hinduism, and did so. Once an Indian Christian came to hold a debate with Swami Dayanand. This gentleman had been a Christian for twelve years and was a very earnest preacher of'hisfaith. But when he heard Swami Dayanand he began to think that the Vedic religion was the best of all. Swami Dayanand converted him also to his religion. Then he said, “The Vedic religion is not meant only for the Hindus, but for everybody."

Now a days we hear much about the equality of man and woman. It was Swami Dayanand, however, who first spoke in favour of granting freedom to women in India. Before he came women were thought to be inferior to men. They were regarded even as Shudaras. So they were never given any education and were kept ignorant. But he protested against all this. “Women should be treated well," he said. “They should receive as much education as men do. Has not Manu, the great lawgiver, said that where women are honoured, there the gods themselves dwell? They should be made good mothers and good wives."

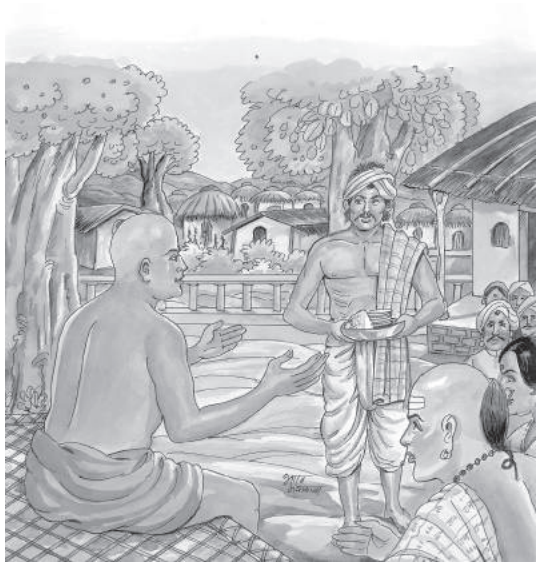

Swami Dayanand was a great lover of Sanskrit, and for a long time he spoke and wrote only in this language. But he soon felt that he could not reachrhe hearts of the people by speaking that language. He therefore began to write and lecture in Hindi. If Hindi is now regarded as the lingua franca oflndia, much of the credit goes to Swami Dayanand. It was he who gave up his own mother-tongue for the sake ofthis language. He did so, because he thought that India could become united only ifit had one language.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

ग्राम्यपशुप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
518. भो गोपाल! गा वने चारय।	हे अहीर! गौओं को वन में चरा।
519. तत्र या धेनवस्ताभ्योऽर्द्धं दुग्धंत्वया दुग्ध्वा स्वामिभ्यो देयमर्द्धं च वत्सेभ्यः पाययितव्यम्।	वहां जो नई व्याई गौयें हैं उनसे आधा दूध तूने दुहकर मालिक को देना और आधा बछड़ों को पिलाना चाहिये।
520. एतौ वृषभौ रथे योक्तुं योग्यौ स्तः, इमौ हले खलु।	ये दोनों बैल गाड़ी में वा रथ में जोतने के योग्य हैं और ये दोनों हल ही में भी।
521. पश्येमाः स्थूला महिष्यो वने चरन्ति।	देखिये, ये मोटी भैंसे वन में चरती हैं।
522. आगच्छ भो! द्रष्टव्यम्महिषाणां युद्धं परस्परं कीदृशं भवति।	आओ जी, देखने योग्य है भैंसों का युद्ध किस प्रकार आपस में हो रहा है।
523. अस्य राज्ञो बहव उत्तमा अश्वाः सन्ति।	इस राजा के बहुत से उत्तम घोड़े हैं।
524. किमियं राज्ञ सतुरंगा सेना गच्छति?	क्या यह राजा की घोड़ों सहित सेना जा रही है।
525. श्रोतव्यं हरयः कीदृशं ह्रषन्ते।	सुनिये, घोड़े किस प्रकार हिनहिनाते हैं।
526. यथा हस्तिनो स्थूलाः सन्ति तथा हस्तिन्योऽपि।	जैसे हाथी मोटे होते हैं वैसे हथिनी भी हैं।
527. नागास्समं गच्छन्ति।	हाथी बराबर चाल से चलते हैं।
528. शृणु, करिणः कीदृशं बृंहन्ति!	सुन, हाथी कैसे चिंहारते हैं!
529. पश्येमे गजोपरि स्थित्वा गच्छन्ति।	देख, ये हाथी पर बैठ के जाते हैं।
530. अस्य राज्ञः कतीभास्सन्ति?	इस राजा के कितने हाथी हैं?
531. पञ्च सहस्राणि।	पांच हजार।
532. रात्रौ श्वानो बुक्कन्ति।	रात में कुत्ते भूंसते हैं।
533. प्रातः कुक्कुटाः संप्रवदन्ति।	सवेरे मुरगे बोलते हैं।
534. मार्जारो मूषकानत्ति।	बिल्ला मूसों को खाता है।
535. कुलालस्य गर्दभा अतिस्थूलाः सन्ति।	कुम्हार के गदहे अत्यन्त मोटे हैं।
536. शृणु, लम्बकर्णा रासभा रासन्ते।	सुन, लम्बे कानों वाले गदहे बोलते हैं।
537. ग्राम्यशूकराः पुरीषं भक्षयित्वा भूमिं शुन्धन्ति।	गांव में सूअर मैला खाके भूमि को शुद्ध करते हैं।
538. उष्ट्रा भारं वहन्ति।	ऊंट बोझा ढोते हैं।
539. अजाविपालोऽजा अवीर्दोग्धि।	गड़रिया बकरी और भेड़ों को दुहता है।
540. पशवोऽपुर्नद्यां जलम्।	पशुओं ने नदी में जल पिया था।
541. रक्तमुखो वानरोऽतिदुष्टो भवति कृष्णमुखस्तु श्रेष्ठःखलु।	लाल मुख का बन्दर बड़ा दुष्ट और काले मुंह का लंगूर तो अच्छा होता है।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

प्रेरक प्रसंग

एक आग्नेय पुरुष : स्वामी योगेन्द्रपाल

गतांक से आगे -

उन्होंने दीनानगर आकर नगर से बाहर अपना केन्द्र बनाया। पूज्य पण्डित देवप्रकाशजी ने लिखा है कि उनके निवास का नाम ‘योगेन्द्र भवन’ था। यह तथ्य नहीं है। इस स्थान का नाम ‘देव भवन’ था। इसी स्थान पर लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज ने 1938 ई. में दयानन्द मठ की स्थापना की। अब भी दयानन्द मठ के मुख्य द्वार पर ‘देव भवन’ लिखा हुआ है।

स्वामी योगेन्द्रपालजी बड़े निर्भीक थे। पण्डित लेखरामजी की भाँति वे किसी से भी दबते, डरते न थे। संसार की कोई भी शक्ति और बड़ी-से-बड़ी विपत्ति भी उन्हें वैदिक धर्म के प्रचार से रोक न सकती थी। पण्डित देवप्रकाशजी ने आपपर जो एक पृष्ठ लिखा है, उसमें ये घटना दी है कि गुरदासपुर के जिला मजिस्ट्रेट ने उनके भाषणों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। स्वामीजी ने इस प्रतिबन्ध की धज्जियाँ उड़ाकर दीनानगर के बाजार में भाषण दिया।

वे अपने हाथ में ओ३म् ध्वज लेकर निकला करते थे। अपने व्याख्यानों की सूचना भी आप ही दे दिया करते थे। इस युग में तपस्वी संन्यासी बेधड़ के स्वामीजी में यह विशेषता देखी जाती थी।

स्वामी श्री योगेन्द्रपालजी कई भाषाओं के विद्वान् थे। प्रायः यह समझा जाता है कि चूँकि वे मुसलमानों के विभिन्न सम्प्रदायों से शास्त्रार्थ किया करते थे, इसलिए वे अरबी और उर्दू, फारसी के ही विद्वान् थे। स्वामीजी संस्कृत, हिन्दी, इबरानी (Hebrew) और पहलवी भाषा का भी गहरा ज्ञान रखते थे। इसके साक्षी उनके वे लेख हैं जो ‘आर्य मुसाफिर’ में छपते रहे। पण्डित विष्णुदत्तजी के एक लेख से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है। अरबी-फारसी वे प्रवाह से बोलते थे। एक बार आर्यसमाज जालंधर के उत्सव पर कुरान हाथ में लेकर आपने कहा था ‘जानते हो संसार में रक्तपात, घृणा, द्वेष, जंग, झगड़े किस पुस्तक के कारण फैले?

वे जहाँ-कहीं जाते थे। व्याख्यानों की एक माला आरम्भ कर देते थे। एक व्याख्यान पर बस नहीं करते थे। आज तो आर्यसमाज में बहुत कम ऐसे वक्ता है जो 5-7 से ऊपर व्याख्यान दे पाएँ। इस आर्यसमाज में कभी पण्डित गणपति वर्मा व पण्डित मनसाराम सरीखे विद्वान् थे। जो वेदी पर बैठते हुए पूछा करते थे। ‘‘कहिए किस विषय पर व्याख्यान दिया जाए?’’

- क्रमशः - प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

प्रथम पृष्ठ का शेष **बदलते मौसम के साथ दमघोटू ....**

के लिए बसों का मार्गव्यय फ्री रखना है। इसलिए दिल्ली की जनता को स्वयं जागना चाहिए और बढ़ते प्रदूषण से बचाव के लिए सरकार को कुछ न कुछ अच्छी ठोस पहल करने के लिए मजबूर करना चाहिए।

सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी एंड वेदर फोरकास्टिंग एंड रिसर्च के अनुसार, एयर क्वालिटी इंडेक्स जो रिकॉर्ड किया गया है वह "बहुत गंभीर" श्रेणी में है 500 से भी ऊपर। यह कैटेगरी के हिसाब से खतरनाक माना जाता है। पर्यावरण विशेषज्ञ बताते हैं कि दिल्ली-एनसीआर में बीते कुछ दिनों से छाई धुंध की सबसे बड़ी वजह पराली जलाना है। चाहे वो पटाखों का धुआं हो, पराली का हो या गाड़ियों का, सबकी सेहत के लिए खतरा बन रहा है। आंखों में जलन, गले में खराश, नाक में खुजली, गले में दर्द, त्वचा पर रैशेज जैसी समस्याएं लोगों को हो रही हैं। जिन्हें सांस की बीमारी है, उनके लिए तो यह प्रदूषण जानलेवा है।

कुछ तरीके, जिनसे आप प्रदूषित हवा से कुछ हद तक खुद को बचा सकते हैं-

- ❑ बेवजह घर से बाहर न निकलें। अगर आप सुबह कसरत या जॉगिंग करने घर के बाहर जाते हैं तो कुछ दिन के लिए घर पर ही कसरत करें।
- ❑ गाड़ियों से निकलने वाला धुआं भी प्रदूषण का कारण है, इसलिए वाहन का इस्तेमाल कम से कम करें। आप गाड़ी पूल कर सकते हैं या सार्वजनिक वाहन का इस्तेमाल कर सकते हैं।
- ❑ जब भी घर से बाहर निकलें मास्क पहन कर निकलें। मास्क आपको सूक्ष्म कणों से भी बचाते हैं।
- ❑ घर में साफ सफाई का ध्यान रखें, धूल और मिट्टी जमा न होने दें।
- ❑ अगर आपको सांस लेने में दिक्कत हो रही है, तो बिना लापरवाही किए डॉक्टर को जरूर दिखा लें।
- ❑ अपने घर में अच्छा वातावरण बनाएं, घर में पौधे लगाएं जिससे आपको शुद्ध हवा मिल सके।
- ❑ जब भी कहीं बाहर से घर वापस आएं, अपना मुंह और हाथ-पैर साफ पानी से धोएं और कुल्ला करें।
- ❑ आप अपने घर में शुद्ध हवा के लिए एयर प्यूरीफायर लगवा सकते हैं।
- ❑ प्रदूषण का स्तर कहां कितना है ये जानने के लिए ऐप का इस्तेमाल कर सकते हैं। जिस एरिया में ज्यादा प्रदूषण हो वहां जाना अवॉइड करें।
- ❑ खाने में विटामिन-सी, ओमेगा-3 जैसे शहद, लहसुन, अदरक का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करें। इसके साथ ही ज्यादा से ज्यादा पानी पिए
- ❑ अपने घरों, दुकानों/आफिसों में हो सके तो दैनिक यज्ञ अवश्य करें।

- आचार्य अनिल शास्त्री

शोक समाचार **श्री रामकिशोर विजय वर्गीय जी का निधन**

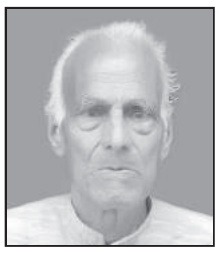

आर्यसमाज सी.-3, जनकपुरी के सदस्य एवं आर्यसमाज के कार्यकर्ता श्री रवीन्द्र कुमार (भाईजी) फोटोग्राफर के चाचाजी श्री रामकिशोर विजयवर्गीय जी का दिनांक 7 नवम्बर, 2021 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ बेरीवाला बाग सुभाष नगर में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 नवम्बर को सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी में ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी के तत्वाधान में 7 नवम्बर,2021 को ऋषि निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या ने ऋषि दयानंद सरस्वती की महिमा का सुन्दर भजनों द्वारा गुण-गान किया।

श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के आर्ष ग्रंथ "आर्याभिविनय" पर अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकाश डाला और सभी श्रोताओं को इस ग्रंथ को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

मुख्य वक्ता श्री राजू वैज्ञानिक ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपकार, योगदान, ऋषि की महिमा एवं जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की "गायत्री महिमा" पुस्तक का विमोचन किया गया। मन्त्री श्री डालेश त्यागी जी के मंच संचालन किया।

- ललित चौधरी, प्रधान

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक हरिनगर का

45वां वार्षिकोत्सव - यज्ञ एवं वेदकथा

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक, हरि नगर, दिल्ली के 45वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर 26 नवम्बर से 28 नवम्बर, 2021 तक यज्ञ एवं वेदकथा का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर डॉ. हरिदेव आर्य जी के प्रवचन एवं श्रीमती सुदेश आर्या जी के भजन होंगे। *- महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री*

पृष्ठ 4 का शेष **सृष्टिकर्ता और पालक ईश्वर कहां रहता ....**

है। इस ज्ञान का विश्लेषण व विवेचन 'दर्शन' के ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। वहां ईश्वर के कार्यों अर्थात् सृष्टि की रचना व कर्म-फल सिद्धान्त वा व्यवस्था आदि को युक्ति व तर्कों से सिद्ध किया गया है।

हमारा कर्तव्य है कि हम वेद, दर्शन एवं उपनिषद आदि ग्रन्थों का तर्क व विवेक बुद्धि से अध्ययन करें। ऐसा करके हम ईश्वर के प्रकाशस्वरूप, सुखस्वरूप, दुःखनिवारक स्वरूप, मोक्षदाता स्वरूप तथा हर क्षण जीवों के साथ रहने वाला, उन्हें सद्कर्मों की प्रेरणा देने वाले आदि नाना स्वरूपों वा कार्यों को जान सकते हैं और अपने जीवन को सफल बनाते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं। यदि हमने मनुष्य जन्म लेकर ईश्वर को जानने व उसे प्राप्त करने सहित परोपकार आदि कर्म नहीं किये तो हमारा मनुष्य जन्म लेना व्यर्थ सिद्ध होता है। इस जन्म में मृत्यु के बाद हमारा पुनः जन्म होगा, परन्तु हमें शायद मनुष्य योनि प्राप्त न हो। हम अगले जन्म में मनुष्य बने और हमें वहां भी सुख व आनन्द की प्राप्ति हो, हम मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना व तप कर सकें, इसके लिये हमें वेद एवं वैदिक साहित्य की शरण में जाना होगा। हमें वेदों में प्रवेश करने के लिए ऋषि दयानन्द कृत "सत्यार्थप्रकाश" ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिये। ऐसा करके हम सृष्टि व ईश्वर विषयक अन्य रहस्यों को जान सकेंगे और अपने इस जन्म तथा परजन्मों का सुधार व उन्नति कर सकेंगे। ईश्वर क्या करता है, इसका हमने संक्षेप में उत्तर दिया है। हम आशा करते हैं कि पाठक इस उत्तर से सन्तुष्ट होंगे और सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर लेख के विषय संबंधी प्रश्नों व आशंकाओं को दूर करेंगे।

-मनमोहन कुमार आर्य
196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

पृष्ठ 2 का शेष

ललित विस्तर से ज्ञात होता है कि बुद्ध की पत्नी गोपा ने अपने मुँह पर घुँघट डालने का यह कहते हुए विरोध किया कि शुद्ध विचारवालों के लिए बाहरी आवरण की आवश्यकता नहीं होती।

कथासरित्सागर में रत्नप्रभा नामक स्त्री को स्पष्ट शब्दों में इस प्रथा का विरोध करते हुए पाया जाता है। कल्हण की राजतरंगिणी में भी पर्दाप्रथा के प्रचलन की सूचना नहीं मिलती। दसवीं सदी के अरबी लेखक अबुजैद ने कहा है कि भारतीय रानियाँ बिना किसी पर्दे के राजसभा में उपस्थित होती थीं। यानि ये यहाँ तब की प्रतिमाये है जब अरब में महिलाओं को बुर्के में पूरा लपेट दिया था।

इसके बाद यहाँ मुग़ल तालिबानियों ने वह काम आरम्भ कर दिया जो आज अफगान तालिबान अफगानिस्तान में, नाइजीरिया में बोको हरम, ईराक, सीरिया में आईएसआईएस कर रहा है। और जब वहां यह सब होता है तब भारत के तालिबानी सोच के मौलाना भी बुर्के/पर्दे, छोटी बच्चियों की शादी की वकालत करते दिख जाते हैं। विडम्बना देखिये जब यह सब होता तब देश के ज्ञानचंद कथित बुद्धिजीवी इनके फतवों और इस निरंकुश शरियत पर सवाल के बजाय हिन्दू समाज की कुरीतियों पर बैठकर रो रहा होता है। जबकि हमारे ग्रंथो में बालविवाह व पर्दाप्रथा का कहीं भी वर्णन या चिन्ह नहीं मिलता। रामायण हो या महाभारत गार्गी जैसी विदुषी हो या विश्वआरा, अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, मैत्रेयी, सिकता, रत्नावली सब बिना पर्दे के महान विदुषी नारी रहीं। तब ये प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यह प्रथाएं भारत में कब और क्यों प्रारम्भ हुईं? और नारी शिक्षा कैसे समाप्त हुई? इस सवाल का एक ही जवाब है कि मुग़ल महान नहीं बल्कि तालिबान थे। जिसे इस बात का शोध करना हो आधुनिक अफगानिस्तान की सैर कर सकता है। जहाँ आज भी बिना बुर्के पर कोड़े और घरों से लड़कियां, महिलाएं उठाई जा रही हैं। लड़कियों के स्कूल बंद और मासूम बच्चियों को बेचा जा रहा है। *- सम्पादक*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 नवम्बर, 2021 से रविवार 21 नवम्बर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 18-19/11/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 नवम्बर, 2021

दिल्ली पधारने पर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के मन्त्री श्री विश्रुत आर्य जी का स्वागत एवं सम्मान

आर्यसमाज के विभिन्न प्रकल्पों का निरीक्षण एवं कार्यकर्ताओं का किया उत्साहवर्धन

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज एक विश्वव्यापी संगठन है। रविवार 14 नवम्बर 2021 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के यशस्वी मंत्री श्री विश्रुत आर्य जी सपत्नीक पहुंचे। इस अवसर पर दिल्ली सभा द्वारा संचालित लगभग सभी प्रमुख सेवा प्रकल्पों के कार्यकर्ता जिनमें आर्य सन्देश, वैदिक प्रकाशन, आर्य मीडिया सेंटर, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ इत्यादि सेवा इकाइयों की और से उनका स्वागत किया गया। श्री विश्रुत जी ने सभी सेवाकार्य ध्यान पूर्वक देखे तथा सभी कार्यकर्ताओं की सराहना करते हुए अपनी ओर से एवं आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की ओर से शुभकामना और बधाई दी। आर्य मीडिया सेंटर के द्वारा आपका सन्देश भी रिकार्ड किया गया। इस अवसर पर श्री विश्रुत जी और उनकी धर्मपत्नी जी का मोती माला, पटका पहनाकर, सत्यार्थ प्रकाश और स्मृतिचिन्ह भेंट करके सम्मान किया गया। श्री विश्रुत जी ने सभा के सभी अधिकारियों और कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया और बधाई दी, प्रेम प्रसन्नता के वातावरण में आत्मीय सद्भाव के साथ विदाई लेकर अपने गंतव्य स्थान के लिए अग्रसर हुए। ज्ञातव्य है कि कोरोना काल में आर्य प्रतिनिधि अमेरिका एवं आर्यसमाज नॉर्थ अमेरिका की ओर से भारत में सेवा कार्यों के लिए ऑक्सीजन कंस्ट्रेटर प्रदान किए गए हैं जोकि भारत में विभिन्न स्थानों पर ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर बैंक के रूप में सेवारत हैं, इसी के साथ अमेरिका की ओर एक सभा को एक एम्बूलेंस भी भेंट की गई है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आगमन पर श्री विश्रुत आर्य जी एवं धर्मपत्नी को सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द जी का चित्र, पीत वस्त्र एवं मोती माला भेंट कर स्वागत एवं सम्मान करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अन्य विभागों के कार्यकर्तागण।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे
प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

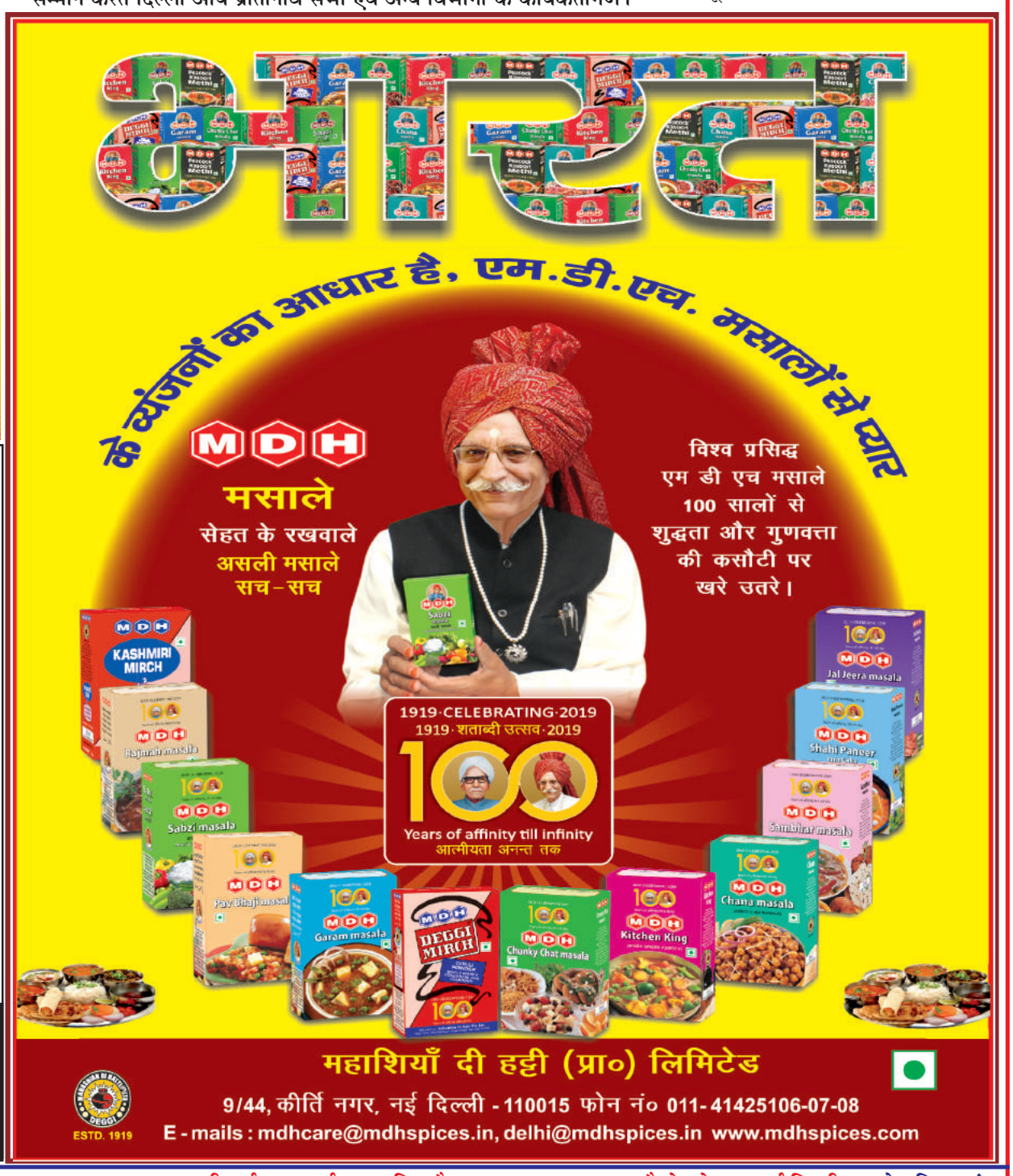

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह